① कौटिल्य

'अर्थशास्त्र' में कौटिल्या ने अपने ~~उस~~ समय की राज्य शासन पद्धति के प्रशासन के विभिन्न पहलुओं का स्पष्ट तथा स्वच्छ वर्णन प्रस्तुत किया है। कौटिल्या एक यथार्थवादी, व्यवहारिक, तर्कसंगत तथा न्यायसिद्ध चिन्तक था। अर्थशास्त्र में कौटिल्या ने मुख्यतः दो बातों का विवेचन किया है-

- एक शासक द्वारा अपने भूक्षेत्र की सुरक्षा व परिरक्षण किस प्रकार किया जाना चाहिए
- एक शासक द्वारा नए भूक्षेत्रों के उपार्जन की कला।

कौटिल्य ने राज्य के दुश्मनों, मित्रों तथा तटस्थ राज्यों के साथ सम्बन्धों को भी प्रमुख रूप से विवेचन किया, इसलिए 'अर्थशास्त्र' को 'राज्य-कला, राजनीति तथा प्रशासन का विज्ञान' माना है। कौटिल्या द्वारा प्रतिपादित राज्य की अवधारणा काफी विस्तृत है। कौटिल्य का राज्य एक कल्याणकारी राज्य था तथा राज्य का उद्देश्य एक समृद्ध अर्थ व्यवस्था तथा राष्ट्रीय धन सम्पदा में वृद्धि करना था। कौटिल्य ने 'अर्थ' को 'दण्ड' को सर्वोच्च तत्व निश्चित किया। ~~वह राज्य~~ के ~~सब महत्वपूर्ण~~ कौटिल्य ने कूटनीति का विस्तारपूर्वक विवेचन किया। कौटिल्य द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर रचित मण्डल सिद्धान्त अत्यन्त विस्तृत एवं संतुलित है।

कौटिल्य के अनुसार "एक राजा जो न्याय अथवा कूटनीति का वास्तविक निहितार्थ की जानकारी रखता है, वह सारे विश्व पर विजय प्राप्त कर लेता है।" कौटिल्या का मण्डल सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के क्षेत्र में अवधारणाओं से परिचित कराता है, मण्डल की अवधारणा, छः प्रकार की विदेश नीति, राज्य की शर्तें, कूटनीतिक दूत से सम्बन्धित संस्थाओं के निर्देशक सिद्धान्त, आदि का विस्तार से वर्णन है।

मण्डल का अर्थ है राज्यों का वृत्त। मण्डल सिद्धान्त भारत के विभिन्न राज्यों को ध्यान में रखते हुए रचा गया है। यह सिद्धान्त एक राजा को विजयी की आकांक्षा रखनेवाला समझकर उसके चर्तुदिक अन्य राज्यों के मण्डल की रचना करता है। इस एक राजा को कौटिल्य ने 'विजीगिषु' कहा। अब उसने चार प्रकृतियों के राज्यों का उल्लेख किया है- ① चार प्रकृतियों के राज्य

- शत्रु राज्य - इसके अन्तर्गत तीन तरह के शत्रु राज्य या राजा हो सकते हैं -
- प्राकृत शत्रु - राज्य की सीमा से सटा हुआ राज्य और उसका राजा -
- सहज शत्रु - राजा के अपने ही वंश में उत्पन्न
- कृत्रिम शत्रु - स्वयं विरुद्ध होने या फिर विरोध करने पर जो शत्रु होता है

② मित्र राज्य - मित्र राज्य भी तीन प्रकार के होते हैं -

- प्राकृत मित्र - राज्य के अपने सीमा से सम्बद्ध सीमावाले शत्रु-राज्य की दूसरी ओर की सीमावाले शत्रु-रा... को प्रथम राज्य का प्राकृत मित्र कहा गया है।

- सहज मित्र- माता-पिता से सम्बद्ध राज्य सहज मित्र माना गया है।
- कृत्रिम मित्र- आश्रम ग्रहण करनेवाला राज्य आश्रय देनेवाले राज्य का कृत्रिम मित्र होता है।

③ मध्यम राज्य- कौटिल्य के अनुसार विजयाभिलाषी राजा और उसके अरि राज्य, दोनों के राज्यों की सीमा पर स्थित शक्तिशाली राजा जो इन दोनों राजाओं को अलग-अलग सहायता देने एवं उनके निग्रह में समर्थ हो; वही मध्यम् राजा कहलाता है।

④ उदासीन — विजयाभिलाषी, शत्रु-मित्र तथा मध्यम् सभी राज्यों से परे, किन्तु सप्त प्रकृतियों से सम्पन्न राजा जो इन सभी राजाओं को सहायता देने या उनके निग्रह में समर्थ हो, वह उदासीन होता है।

इन चार प्रकार के राज्यों के आधार पर कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त की विवेचना की।

मण्डल सिद्धान्त व मण्डल का स्वरूप:- मण्डल का केन्द्र ऐसा विजि-गीषु राजा होता है जो पड़ोसी राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाने को प्रयत्नशील रहता है।

विजिगीषु राजा के राज्य की सीमा पर जो राज्य होगा, वह स्वाभाविक रूप से विजिगीषु का शत्रु या अरि होगा। किन्तु इस अरि राज्य की पिछली सीमा पर जो दूसरा राज्य स्थित होगा, उसे विजिगीषु अपना मित्र समझ सकता है क्योंकि वह उसके अरि राज्य के शत्रु होने के कारण अवश्य उसका मित्र होगा। किन्तु इस के बाद का राजा स्वाभाविक रूप से तथा "पड़ोसी व शत्रु मित्र" के नियम के कारण विजि-गीषु के अरि का मित्र होगा। इसी प्रकार इसके बाद का राजा मित्र का मित्र और अगला राजा अरिमित्र का मित्र होगा। इसलिए जब विजिगीषु शत्रु को जीतने के लिए प्रवृत्त होगा तो भूमि की दूरी के अनुसार सामने की ओर से अरि, मित्र, अरिमित्र, मित्र का मित्र और अरिमित्र का मित्र — ये 5 राजा क्रमानुसार आते हैं।

फिर विजिगीषु के पीछे के मण्डलीय राज्यों में तुरन्त पीछे स्थित राज्य को 'पार्ष्णिग्राह' कहा जाता है। यह भी पड़ोसी होने के कारण स्वाभाविक रूप से विजिगीषु का शत्रु होगा और जब विजिगीषु अपने सामने स्थित 'अरि' पर आक्रमण करता है तो यह पीछे से विजिगीषु के राज्य में घुसकर गड़बड़ी पैदा करता है। इधर 'आक्रन्द' होता है क्योंकि यह ऐसा राजा होता है जिसको सहायता पाने के लिए विजिगीषु ~~आक्रन्द~~ आक्रन्द करता है। यह स्वाभाविक रूप से ~~पार्ष्णिग्राह~~ पार्ष्णिग्राह का शत्रु होने के कारण विजिगीषु का मित्र होता है। आक्रन्द के बाद का राजा पार्ष्णिग्राह का मित्र होने के कारण पार्ष्णिग्राहा और उसके अगला राजा आक्रन्द का मित्र होने के कारण आक्रन्द-
-सार कहलाता है।

~~अधिशासित~~ के ③

विजिगीषु तथा अरि के राज्यों की सीमा के साथ लगा होता है यह शक्तिशाली राज्य होता है। यह विजिगीषु या उसके अरि किसी की भी सहायता कर सकता है।

एक और राज्य उदासीन है। उदासीन राजा का प्रदेश - विजिगीषु, अरि तथा मध्यम सभी से परे होता है। यह बहुत प्रबल होता है और युद्ध के समय तटस्थ ही रहता है।

इस प्रकार मण्डल सिद्धान्त में कौटिल्य ने 12 राज्यों की स्थिति का चित्रण किया है। जबकि कोई एक राज्य विजिगीषु की भूमिका अदा करे। यहाँ मण्डल शब्द ~~यद्यपि~~ यद्यपि 12 राज्यों के समूह को एक वृत्ताकार क्षेत्र की ओर इंगित करता है तथापि उन राज्यों के स्थान की कल्पना एक सीधी रेखा में भी की जा सकती है। फिर, स्थिति के अनुसार राज्यों की संख्या घट बढ़ भी सकती है। संख्या 12 तो सिर्फ इस बात का द्योतक है कि यदि कोई राज्य अपने समीप स्थित राज्य को युद्ध द्वारा अधीनस्थ करना चाहे तो वैसी स्थिति में उसके 12 सम्भाव्य सम्बन्धों की कल्पना की जा सकती है।

2 यहाँ स्पष्ट है कि मध्यम और उदासीन को छोड़कर मण्डल के अन्य सभी राज्यों की शक्ति प्रायः समान होती है। इस प्रकार मण्डल समान शक्तिवाले राज्यों का एक समूह होता है जो दो विरोधी गुटों में विभक्त रहता है। और जहाँ एक गुट का नेता समस्त मण्डल पर सर्वोच्चता स्थापित करने का प्रयास करता है। एक ही राज्य परिवर्तित स्थिति के कारण अरि, मित्र या विजिगीषु भी हो सकता है।

आलोचना:- आलोचकों द्वारा कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त की पर्याप्त आलोचनाएँ की गयी हैं। प्रथम, यह कहा गया है कि भौगोलिक हालत से इस सिद्धान्त का महत्व समाप्त हो गया है। आज भौगोलिक परिस्थिति से अधिक नीति तथा विचार सम्बन्धी कारकों से मित्रता निर्धारित हो रही है। द्वितीय, जहाँ कौटिल्य की मान्यता है कि पड़ोसी राज्यों का पारस्परिक संबंध शत्रुतापूर्ण होता है, आज प्रत्येक प्रभावशाली राज्य अपने पड़ोसी राज्यों से मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है।

किन्तु इन आलोचनाओं के संबंध में यह कहा जा सकता है कि - मण्डल राज्य में प्रायः सभी राज्यों की शक्ति लगभग समान होती थी। इस स्थिति में कौटिल्य का विश्लेषण सार्थक है। आधुनिक युग की अनेक घटनाएँ (वैदेशिक नीति) कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त के अन्तर्गत इस उक्ति को प्रमाणित कर रही है कि शत्रु का शत्रु मित्र होता है। अनेक मामलों में पड़ोसी शत्रु होते ही हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कौटिल्य के 'अरि' और 'मित्र' के समूह की कल्पना के अनुरूप थी। साथ ही गुटनिरपेक्ष राज्य भी धीरे धीरे शक्तिशाली होकर कौटिल्य के 'उदासीन' राज्य की भूमिका अदा करना चाहते हैं। अतः कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध की मौलिक वास्तविकताओं पर आधारित है।

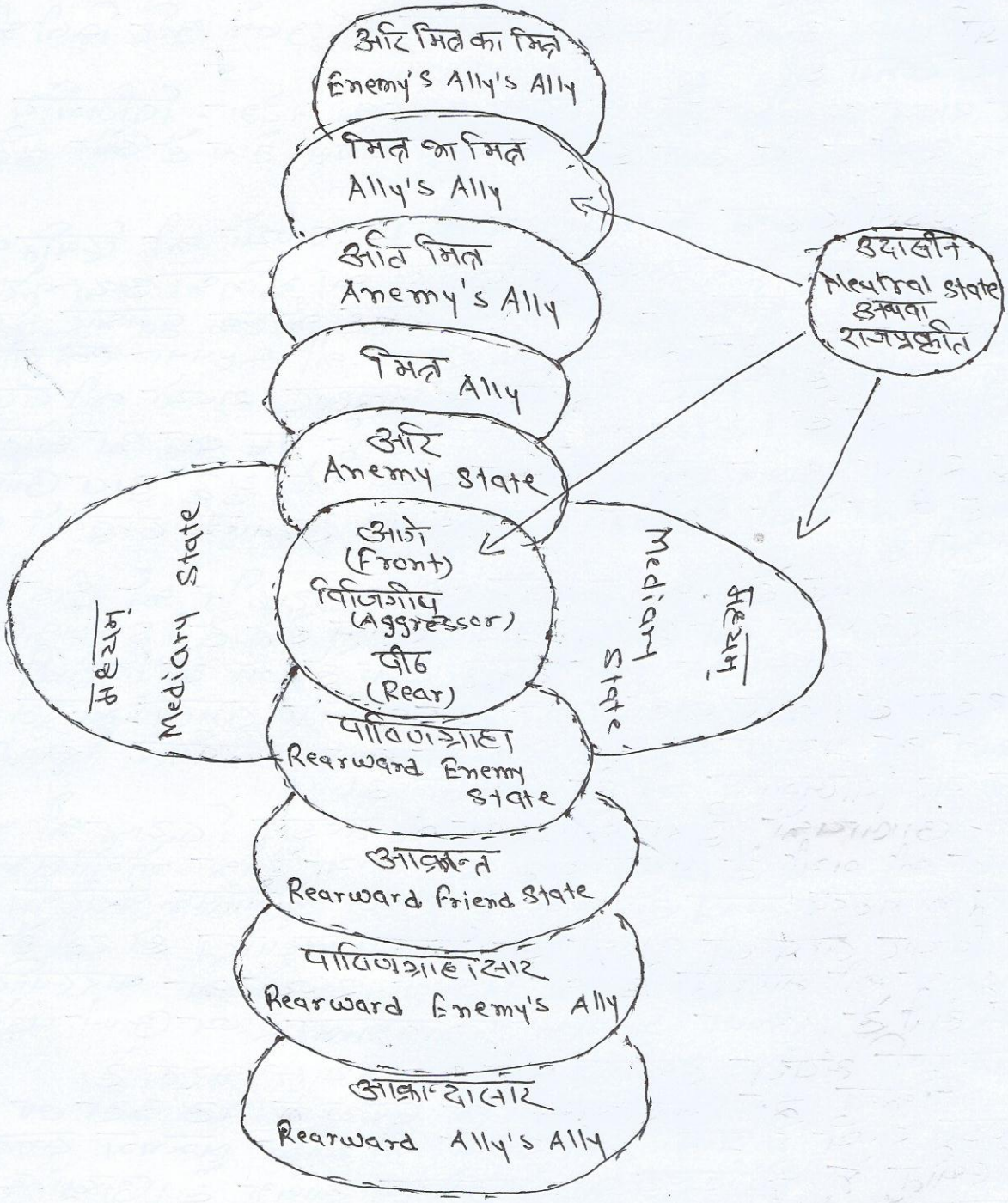

बारह राज्यों का राजकीय मण्डल